HINDI ARTICLES

बेटा-बेटी एक समान

बेटा तन है, बेटी मन है,
बेटा वंश है, बेटी अंश है,
बेटा आन है, बेटी शान है,
बेटा मान है, बेटी गुमान है,
बेटा वारिस है, बेटी पारस है,
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है
बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है
बेटा दवा है, बेटी दुआ है
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है
बेटा राग है, बेटी बाग है
बेटा गीत है, बेटी संगीत है
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है।

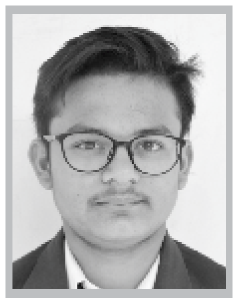

उमंग अग्रवाल
कक्षा-10 (अ)
DPS-JC/1220

नारी एक रूप अनेक

* बेटियाँ : धन की पेटियाँ
* बहना : परिवार का गहना
* भाभियाँ : घर की चाबियाँ
* माता : हर कोई जिसके गीत गाता
* दादियाँ : नजारों की वादियाँ
* नानियाँ : महारानियाँ, बच्चों की कहानियाँ
* बुआ : जो हरदम देती दुआ
* चाची : जिसकी हर बात साँची
* ताई : जिसने सदा खुशबू फैलाई

अर्चित पालीवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/125

ज़रा सोचें ....

एक पेड़ की लकड़ी से माचिस की लाखों तीलियाँ बन जाती है। लेकिन माचिस की एक तीली से निकली चिंगारी लाखों पेड़ों को जला सकती है। इसी तरह नकारात्मक विचार या संदेह हजारों सपनों को जला सकता है। इसलिए हमेशा सकारात्मक सोचें।

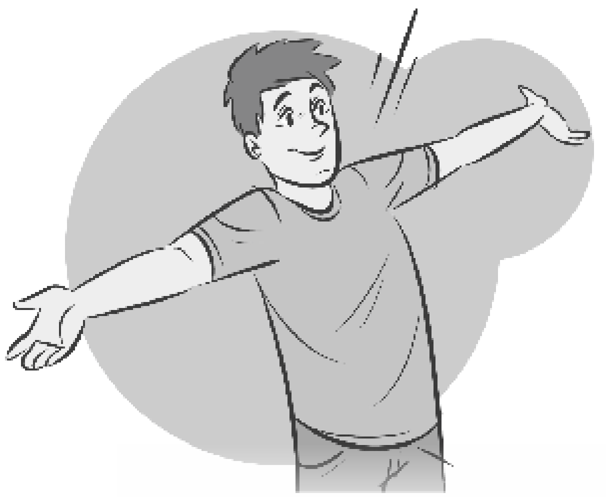

पेन्सिल और रबर

पेन्सिल यह पतली लंबी
तीखी नोक वाली।
इंद्रधनुष सी रंग-बिरंगी
अंधियारे सी काली
षट्कोणिक कुछ और कुछ गोल,
कुछ पीछे रबरों वाली।
कागज पर चलती रहती है,
कभीं न थकने वाली।
दोस्त शॉपनर इसकी नोक,
शार्प किया करता है।
पेन्सिल बन जीवन पत्रे पर
सुख को लिखते जाना।
और नहीं तो रबर बन,
औरों के दुःख मिटाना।

अर्चित पालीवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/125

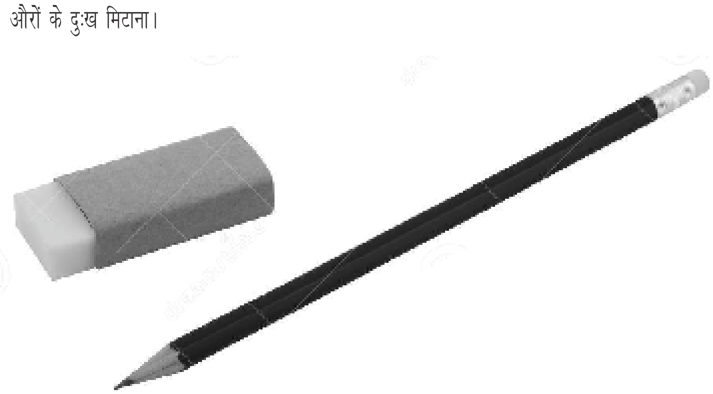

माँ

मेरे हँसने से हँसती है,
मेरे रोने से रोती है।
मेरी खुशहाली के सपने,
जो हर एक साँस में जीती है,
एक माँ ही तो होती है।
उठाती है हज़ारों गम,
फिर भी छाँव सी नम,
जो मेरा हर एक दर्द समझती है,
एक माँ ही तो होती है।
अपने बच्चों की खुशियाँ,
जो चाहती है, हमेशा
अपने बच्चों को निहारती हो हमेशा
एक माँ ही तो होती है।
हर माँ की यह,
सोच होती है सचमुच
अपने बच्चों को हमेशा
बनाना चाहती है कुछ,
एक माँ ही तो होती है।

अर्चित पालीवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/125

याद आऐंगे ये पल

कुछ सालों बाद ये पल बहुत याद आएँगे
जब हम सब दोस्त अपनी-अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएँगे।
पैसे तो बहुत होंगे लेकिन खर्च करने के लिए लम्हे कम
पड़ जाएँगे,
एक कप चाय याद दोस्तों की दिलाएगी
यही सोचते-सोचते आँखें नम हो जाएँगी
दिल खोलकर इन लम्हों को जी लो यारों
ज़िन्दगी अपना इतिहास कभी नहीं दोहराएगी।

इति देवॉगन
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/516

पेड़ लगाएँ

चलो एक अभियान चलाएँ पेड़ अधिक से अधिक लगाएँ।
इनसे जनम-जनम का नाता, छाया, प्राणवायु के दाता,
समझें, औरों को समझाएँ, हर प्राणी का करते हित हैं,
ताप नियंत्रित करते नित हैं, मिलकर इनका वंश बढ़ाएँ।
चौमासे में जल बरसाते प्यारा पर्यावरण बनाते,
पेड़ों से घर द्वार सजाएँ। पेड़ सयाने, पौधे बालक
वन, उपवन, जीवन के पालक हरियाली से हाथ मिलाएँ।
स्वयं करें हम वृक्षारोपण और करें फिर उनका पोषण
छाया, फूल और फल पाएँ।

अर्चित पालीवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/125

भलाई के लिए कहा गया झूठ सच से बड़ा होता है।

एक किसान अत्यंत गरीब था। एक रात वह अपने बच्चों को भूख से पीड़ित न देख सका तो वह पड़ोस के किसान के बाड़े से एक गाय खोलकर ले आया। सवेरा होने से पहले उसने गाय का दूध दुहकर बच्चों को पिला दिया। सवेरे पड़ोसी किसान ने देखा कि एक गाय कम है तो उसने जाँच-पड़ताल की। ढूढ़ने पर गाय गरीब किसान के आँगन में बँधी मिली। वह किसान द्वारपाल को बुला लाया।

द्वारपाल ने पूछताछ आरंभ की तो गरीब किसान ने कहा कि गाय उसी की है, पर ऐसा कहते हुए उसकी आँखे नीची हो गई। पड़ोसी किसान ने देखा कि गरीब किसान के घर में खाने को कुछ भी नहीं है तो वह बोला कि गाय उसकी नहीं है, शायद गरीब किसान की ही होगी। उसके साथ आए लोगों ने उससे झूठ बोलने का कारण पूछा तो वह बोला - ''मैं सच बोलता तो मेरी गाय मुझ तक लौट आती, पर वह किसान और उसके बच्चे भूखे रह जाते।'' किसी की भलाई के लिए कहा गया झूठ सच से बढ़कर होता है।

अदिति शुक्ला
कक्षा-11 (ब)
DPS-JC/192

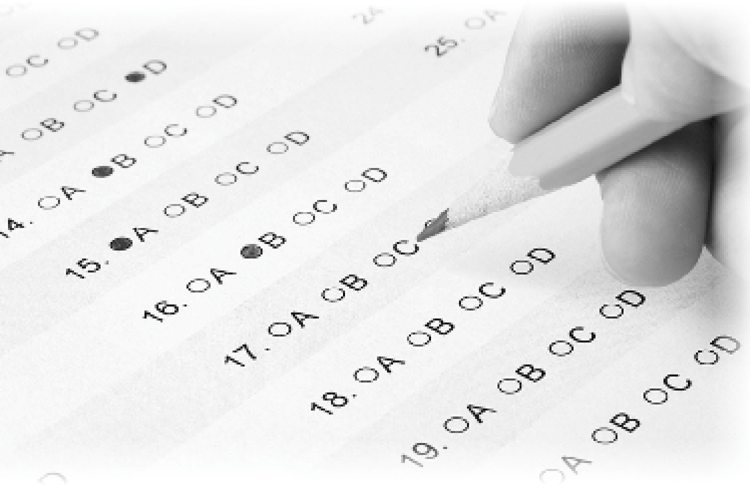

परीक्षा

परीक्षा एक क्रिकेट का खेल है,
विद्यार्थी एक बैट्समैन है।
कलम एक बैट है,
परीक्षक एक अम्पायर है।
चपरासी एक कमेंट्रेटर है,
मार्कशीट एक स्कोर बोर्ड है।
फेल होना एक तेज गेंदबाल है,
अच्छे उत्तर सही बल्लेबाजी है,
ताक-झांक में पकड़े जाना रन-आउट है।
नकल करते पकड़े जाना कैच-आउट है।
कोरा पेपर छोड़ना क्लीनबोल्ड है,
परीक्षा एक क्रिकेट का खेल है।

आकांक्षा सिंह
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/115

गौरी अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/418

कलम

यह कलम नहीं जादुई छड़ी है
जिसे एक लेखक की समझ
ही इस्तेमाल कर सकता है
इस जादुई छड़ी के इस्तेमाल से
एक भूखे गरीब का पेट भर सकता है
एक गरीब अमीर बन सकता है
एक भ्रष्ट नेता जेल जा सकता है
यह सिर्फ जादुई छड़ी नहीं है,
यह लेखक का शस्त्र है।
जिसे वह इस्तेमाल करके
अपने शब्दों द्वारा किसी भी
बुरे लोगों का सामना कर सकता है
जहाँ अस्त्र-शस्त्र व्यर्थ हों
वहाँ कलम काम आती है
जो इस जादुई छड़ी का कर सके सही इस्तेमाल।
आ जाती है पूरी कायनात उसके हाथ।।

मेरा अस्तित्व, मेरी पहचान

मैं सारी दुनियाँ से कहती हूँ मेरा अस्तित्व मेरी पहचान है,
मैं एक पत्नी हूँ, बहू हूँ, और माँ हूँ अनेक रूप हैं मेरे।
लेकिन आखिर ये दुनियाँ क्यों भूल जाती है कि वो भी तो
मेरा प्रतिरूप है मैंने सृष्टि को जन्म दिया दुनियाँ को बनाया है
लेकिन एक ही पल में उसने मुझे पराया बनाया है
लड़के की चाहत में जब कोई पिता अपनी बेटी को मारता है
तो वह क्यों भूल जाता है कि वह उसे नहीं,
अपनी माँ को भी मार रहा है। पर मैं रूकूँगी नहीं,
थकूँगी नहीं, अपने प्रयासों से कभी पीछे नहीं हटूँगी,
आज मैं सारी दुनियाँ से यही कहना चाहती हूँ,
मेरा अस्तित्व ही मेरी पहचान है हाँ,
यही तो मेरा अभिमान है।

गौरी अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/418

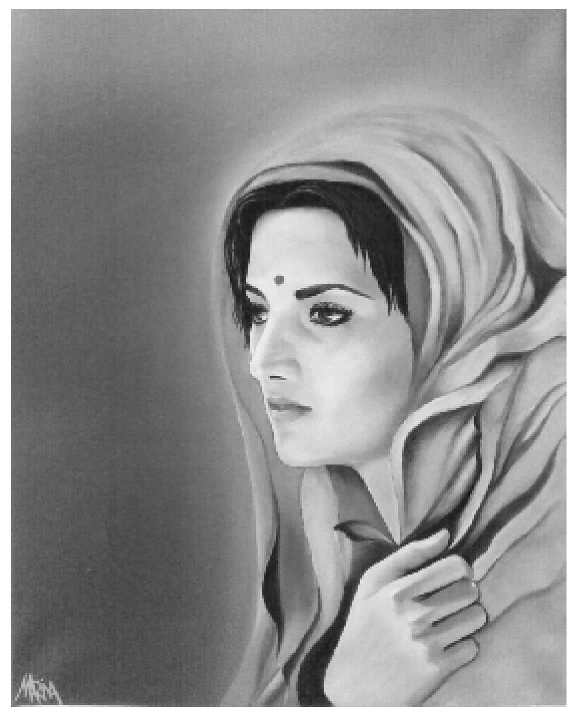

निर्भया

बेटी, नारी, स्त्री की बदल गई अब हिस्ट्री।
प्रेरित करते शिक्षा को पर सुरक्षा का नाम नहीं।
डेवलपमेन्ट का क्या करें जब नारी का सम्मान नहीं।
झुकी हुई नज़र उनकी खामोश, मौन, चुप रहती है।
चेहरे पर जहर लगी दर्द न किसी से कहती है।
तेरे घर की बेटी नहीं इसलिए न आती तुमको दया।
क्या आया और क्या गया बस नाम दे दिया निर्भया।।

गौरी अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/418

वृक्ष

फल और फूल देते हैं वृक्ष
ठंडी ठंडी हवा देते हैं वृक्ष
इसको जिसने लगाया
उसको सुख देते हैं वृक्ष

सूखे पत्ते और लकड़ियाँ
मुफ्त में सब देते हैं वृक्ष
सबके दुःख पल भर में
सारे हर लेते हैं वृक्ष

गौरी अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/418

धरती से प्यार करते हैं
धूप और गर्मी सहते हैं
जाड़ा गर्मी बरसात में
हरे भरे रहते हैं।

प्रदूषण से हर दिन
बचाते हैं सबको वृक्ष
धरती पर हरियाली
फैलाते ही रहते वृक्ष।

पक्षियों को ठिकाना देते हैं वृक्ष
सबको अपना समझते वृक्ष
नहीं किसी से कुछ लेते हैं।
नहीं किसी से कुछ लेते हैं।।
अपनी खुशी सबको देते हैं

कई पीढ़ियों तक ज़िन्दा रहते
जल्दी नहीं ये सूखते,
मुझको मत काटो इंसानों
हाथ जोड़कर कहते हैं।

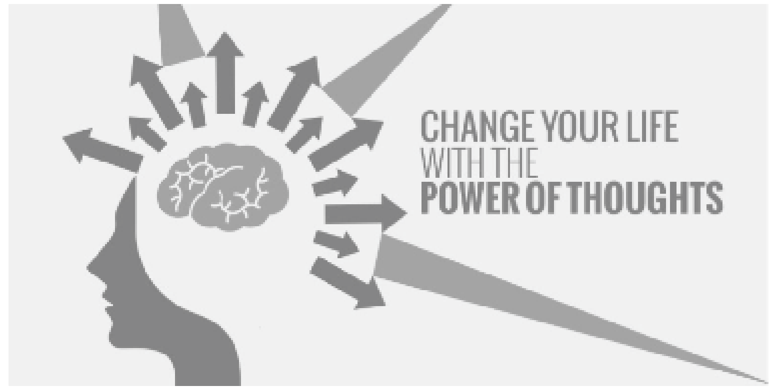

सुविचार

* अगर आप असफलता से डरते हैं तो आप सफलता पाने के हकदार नहीं है।
* हर काम में गलतियाँ जरूरी हैं इन्ही की वजह से तो हमें नया सीखने का मौका मिलता है।
* जिसे हार जाने का डर होता है उसकी हार निश्चित होती है।
* हमेशा तर्क करने वाला दिमाग सिर्फ धार वाले चाकू की तरह है, जो प्रयोग करने वाले के हाथ से ही खून निकाल देता है।
* सिर्फ खड़े होकर पानी को ताक कर आप समुद्र नहीं पार कर सकते।

मिताली राज़
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/475

चिड़िया

प्यारी चिड़िया रोज सवेरे
दरवाज़े पर आती,
पर फैलाकर फुदक-फुदक कर
चीं-चीं, चीं-चीं गाती।
जाड़ा हो, गरमी हो या वर्षा,
आलस उसे न भाता
बिखरे पड़े हुए दानों से
भरना पेट सुहाता।
कभी बुराई या इर्ष्या की
राह नहीं अपनाती
प्रेम-भाव से जीने की
सदा सीख दोहराती।

मिताली राज़
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/475

मन करता है

मिताली राज़
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/475

मन करता है पंख लगाकर, पक्षी सा उड़ जाऊँ।
मस्त पवन के संग में हो लूँ, नभ में गोता खाऊँ।
मन करता है मछली बनकर, सागर में खो जाऊँ।
जलपरियों संग नाचूँ गाऊँ, लहरों में सो जाऊँ।
मन करता है भौंरा बनकर, फूलों पर मडँराऊँ।
रंग-बिरंगी इस दुनिया में, जी भर मौज मनाऊँ।

माँ का महत्त्व

वैभव मिश्रा
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/919

माँ शब्द में है कितनी प्यार भरी अनुभूति
उसे तो कहते है, वात्सल्य की मूर्ति
हमारी ऊँगली थामकर हमें है चलना सिखाती!
जीवन जीने के लिए काबिल है बनाती।
हमें बड़ा करने में मेहनत की दिन-रात
बिना कहे ही कैसे समझ जाती है बात।
समर्पित करती है अपनी जिन्दगी बच्चों के लिए,
जीवन सारा न्यौछावर करती हमारे लिए।
मुश्किल है समझना माँ की परिभाषा
प्रकृति के पथ पर चलते रहें यही उनकी अभिलाषा।
माँ होती भगवान का साक्षात् स्वरूप
जिन्दगी भर के लिए समा जाता है मन में माँ का रूप।
माँ के बिना लगता है जीवन अधूरा अधूरा
मिटा देती है माँ हमारे जीवन का अँधेरा।

मेरी आप सभी से प्रार्थना है कि अपनी माँ का हमेशा आदर करें और उनका हमेशा ख्याल रखें। दुनियाँ में एक ही ऐसा व्यक्ति है, जो कभी आपके बारे में बुरा या गलत नहीं सोच सकता और वह व्यक्ति है आपकी माँ !
"ऊपर जिसका अंत नहीं उसे असमां कहते हैं और नीचे जिसके उपकारों का अंत नहीं उसे माँ कहते हैं।"

स्वच्छ भारत

अंशिका शर्मा
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/089

भारत देश हमारा है,
हमको जान से प्यारा है।
अब एक कदम स्वच्छता की ओर,
हमको भी उठाना है।
देश हमारा अपना घर है,
जिसमें हम सब रहते हैं।
फिर इसकी सफाई पर,
गौर क्यों नहीं करते हैं।
देश को अपने स्वच्छ बनाने का प्रण हमने कर लिया,
अब देखेगी सारी दुनियाँ अपना स्वच्छ इंडिया।
मोदी जी ने कदम बढ़ाया देश को अपने आगे पहुँचाया,
राह पर उनकी हम भी चल पड़े भारत को स्वच्छ बनाएँगे।
देश से अपने वादा करके हम सब भी आएँगे।
स्वच्छ भारत के विश्वास का दीप सबके मन में जलाएँगे,
भारत को स्वच्छ बनाएँगे, भारत को स्वच्छ बनाएँगे।

समय का सदुपयोग

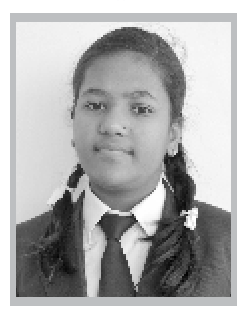

साक्षी अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/138

संसार में समय को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एंव मूल्यवान धन माना गया है। अतः हमें इस मूल्यवान धन अर्थात् समय को व्यर्थ ही नष्ट नहीं करना चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय वापस नहीं लौट पाता। इसके विषय में एक कहावत प्रसिद्ध हैं - " गया वक्त फिर हाथ आता नहीं, समय किसी की प्रतिक्षा करता नहीं।" समय का महत्त्व इस बात से भी स्पष्ट है कि यदि धन खो जाये तो उसको भी पुनः कमाया जा सकता है। यदि स्वास्थ्य खो जाये तो उसको भी प्राप्त कर सकते हैं परन्तु समय यदि एक बार हाथ से निकल जाये तो पुनः लौट कर नहीं आ सकता। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हैं, वे ही जीवन में सफल होते हैं।

संसार में जितने भी महापुरूष व मेधावी व्यक्ति हुए हैं उन्होंने अपने समय का बुद्धिमत्तापूर्वक सदुपयोग किया है। नेपोलियन का उदाहरण हमारे सम्मुख है। केवल पांच मिनट की देरी से युद्ध-भूमि में पहुँचने के कारण वह पराजित हो गया तथा कैद कर लिया गया। अतः हमें अपने सभी कार्य समय पर ही करने चाहिये। आज का काम कल पर नहीं टालना चाहिये।

''बचपन''

स्नेहा अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/1177

बचपन किसको न होगा प्यारा,
होगा ज़रूर सभी की आँखों का तारा,
आम-अमरूद के पेड़ों से झूलता वो बचपन,
रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे दौड़ता वो बचपन,
मस्त हवाओं के झोंकों में लहराता वो बचपन,
स्नेह सिंचित आँचल में मुँह छुपा खिलखिलाता वो बचपन,
समय के हाँथों से फिसलकर न जाने कहाँ खो गया।
जिन्दगी के पहलू से निकलकर न जाने कहाँ गुम हो गया।।
न दीदी का साया मिला, न भईया का सहारा मिला,
न सुख ने साथ दिया, न खुशियों ने आवाज दी।
धूप, बरसात, जाड़े की ठिठुराती रात सहता हुआ,
दुबक कर न जाने कहाँ बैठ गया है आज।
किसी ने देखा है क्या? यह प्रश्न सभी से है मेरा।
अभी-अभी खेलती थी, यहाँ धूप-छाँव सा वो बचपन
छुप गया कहाँ मचाता ऊधम?
करता है तलाश उसी की आज-
रोता हुआ ये बावरा मन।।

माँ

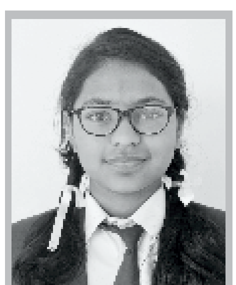

खुशी सिंघानियाँ
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/137

जो अपने आँचल में सुलाये वो होती है, माँ.....।
जो हमें ऊँगली पकड़कर चलना सिखाए वो होती है, माँ......।
जो हमें हाथ पकड़कर लिखना सिखाए वो होती है, माँ....।
जो हमें चोट लगने पर दवा लगाए वो होती है, माँ....।
जो हमें स्कूल भेजने के लिए सुबह उठकर नाश्ता देती वो होती है, माँ....।
जो हमें सही गलत की पहचान करवाए वो होती है, माँ....।
जो हमारी गलतियों को सुधारे वो होती है, माँ.....।
जो हमारे खुश होने पर खुश हो वो होती है, माँ....।
जो हमें पढ़ाई के लिए बार-बार कहे वो होती है, माँ.....
और जो हमें बात-बात पर डाँटे और फिर प्यार दिखाए वो होती है, माँ....।।

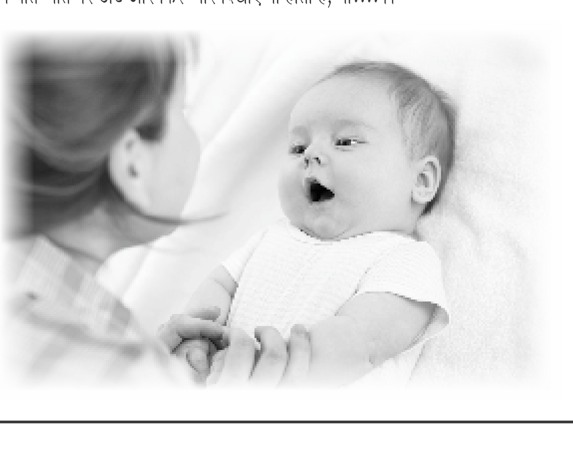

चुटकुले

स्नेहा अग्रवाल
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/1177

* शिक्षक- तुम्हारा नाम क्या है?
छात्र- जीवन 'बाल'।
शिक्षक- और तुम्हारे पिता का नाम?
छात्र- सूर्य प्रकाश।
शिक्षक-वैरी गुड! अब इन्हीं नामों को अंग्रेजी में अनुवाद करो।
छात्र- माई नेम इज ''लाईफ बाय'' एण्ड माई फ़ादर्स नेम इज ''सन लाईट''!

* पिता- बेटे! दुःखी मत हो। भाग्य में फेल होना लिखा था, सो हो गए!
पुत्र- तब तो बहुत अच्छा हुआ, यदि मैं मेहनत करता तो सारी मेहनत बेकार जाती!

प्रज्ज्वल श्रीवास्तव
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/959

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक स्वच्छता मिशन है। यह अभियान 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गाँधी के 145वें जन्मदिन पर भारत सरकार की ओर से अधिकारिक तौर पर शुरू किया गया है। भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 2019 तक भारत को स्वच्छ बनाने का लक्ष्य रखा है, जो महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती होगी।

सफाई का बहुत महत्त्व है। साफ सफाई सिर्फ रास्तों में नहीं होनी चाहिए। हमें अपने घरों को भी साफ़ रखना चाहिए। हर रोज़ घर को पोछना और चमकाना होगा, हमें कचरा इधर-उधर फेकना नहीं चाहिए क्योंकि इससे हमारा पर्यावरण गंदा होगा और हमें विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ होगी। हमें शौच बाहर नहीं करना चाहिए। बगीचों को भी साफ रखना होगा। वहां हमें कूड़ा नहीं फेकना चाहिए और पेड़ पौधे लगाने चाहिए। हमें अपने विद्यालय को भी साफ रखना चाहिए। हमें हमारे घर के आस-पास स्वच्छता न अपनाने से तरह-तरह की बीमारियाँ हो सकती हैं जैसे डेंगू, बुखार, मलेरिया आदि। हम सब इन बीमारियों से सुरक्षित रह सकते हैं, अगर हम स्वच्छ रहेंगे तो।

इस अभियान में बहुत ही रूचि पूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और वह फिर प्रत्येक 9 लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे, और ये श्रृंखला तब तक चलती रहेगी जब तक कि भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए।

शिक्षक

हमारे जीवन में शिक्षक का बहुत महत्त्व है- जिस प्रकार कुम्हार कच्चे घड़े को ठोक-ठोक कर निश्चित आकार प्रदान करता है, उसी प्रकार शिक्षक भी अपने विद्यार्थी को शिक्षा देकर गुणवान बनाते हैं। गुरू गोविंद दोऊ खड़े काको लागूँ पाँए - अर्थ है :- गुरू और गोविंद दोनों खड़े हैं, पहले किसके पैर पड़ूँ ? पहले गुरू का पैर पड़ना चाहिए क्योंकि गुरू ही गोविंद के पास जाने का रास्ता बताते हैं। गुरूर्ब्रम्हा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरूर्साक्षत् परमंब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः।। अर्थ है :- गुरू ही ब्रम्हा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही महेश्वर है। गुरू साक्षात परमब्रम्ह है, ऐसे गुरू को मैं नमस्कार करता हूँ।।

प्रज्ज्वल श्रीवास्तव
कक्षा-8 (ब)
DPS-JC/959

बंदर मामा

बंदर मामा पहने सूट
पैर में उनके बढ़ियॉं बूट!
जेब का आला गले में डाला
बैग दवाई का ले डाला।
साइन बोर्ड अपना लगवाया
डॉक्टर बंदर सिंह लिखवाया।

एकता

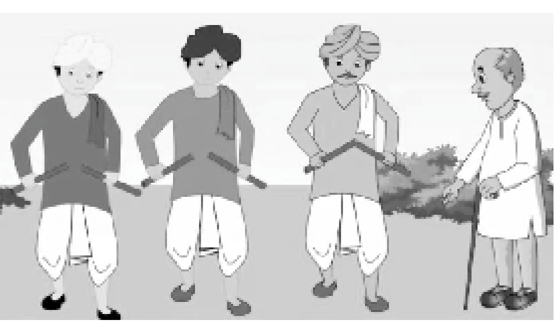

बना घोसला है तिनके से,
माला बनती है मनकों से।
कण-कण से होता पहाड़ है।
शाखाओं से बना झाड़ है,
शब्द-शब्द से बनी पहेली
ऊँगलियों से बनी हथेली
पन्ने-पन्ने से किताब है
पंखुड़ियों से ही गुलाब है।
मेल जोल से मिलती ताकत
करो एकता का सब स्वागत।

रक्षित अग्रवाल
कक्षा-5 (ब)
DPS-JC/417

समय

रात को जल्दी सोना सीखो
सुबह जल्दी उठ जाना
अच्छा होता है भोजन को
ठीक समय पर खाना
ठीक समय पर खेलो
अच्छी बातें जहाँ मिलती है
हँसी खुशी सब ले लो।

सुरक्षा मंत्र

मत सोचो यह बार-बार
क्या सुरक्षा भी है एक उपकार
अगर दुर्घटना ने किया प्रहार
होगी जीवन संग्राम में हार
न करें सुरक्षा की अनदेखी
नही तो आपको नहीं देख पाएगी
ये दुनियाँ अगली बार

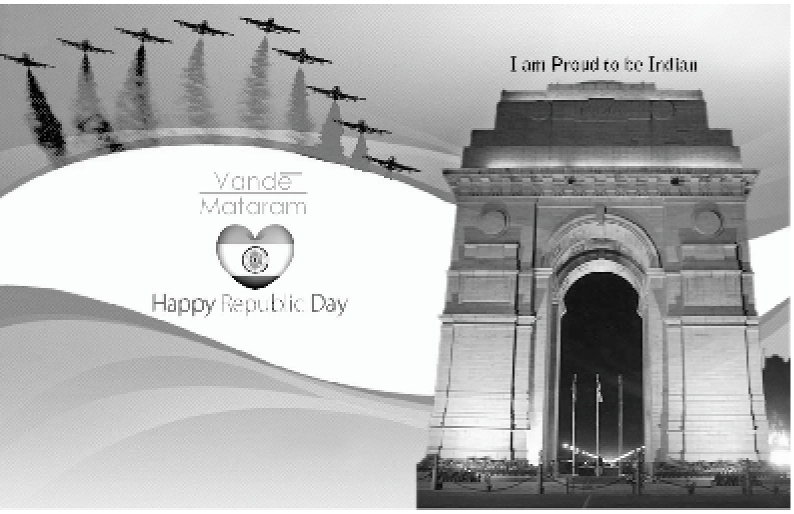

हमारा हिन्दुस्तान

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
हम सब हैं भाई-भाई
कोई हिन्दू कोई मुसलमान
हम सब है तो केवल एक इंसान।
क्यों लाते हो इस मजहब को हमारे बीच
हम सब तो है, एक ही पौधे के बीज
हम अगर चाहें तो भी अलग नहीं हो सकते
क्योंकि हम एक ही देश में रहते।
हम सब है, एक ही फूल की अनेक पंखुड़ियाँ
कुछ लड़के तो कुछ लड़कियाँ।
क्यों हम लगाते हैं इनके ऊपर मजहब की मज़बूत बेड़ियाँ
हमें जीने देना चाहिए, इनकी अपनी जिन्दगियाँ।
कोई चाहता है अच्छा हिन्दू बनना
कोई अच्छा मुसलमान, सच तो सबके दिल में बसा है,
बनना सच्चा इंसान, अब न हिन्दू न मुसलमान।
अब बनाएँ एक इंसान। आज विनती करता उनसे अब
न और शैतान बनाओ आओ अब हिन्दुस्तान बनाए।

समर्थ पालिवाल
कक्षा-6 (ब)
DPS-JC/054

जोक हा हा हा

खुशवंत कुमार डाहिरे
कक्षा-6 (ब)
DPS-JC/747

* दादा जी : अरे बेटा चिंटू जा पान ले आ।
चिंटू : दादा जी मैं जापान कैसे ला सकता हूँ वो तो एक देश है!!

* मन्नू : पिता जी मैं नहाने जा रहा हूँ।
पिता जी : मन्नू जल्दी नहाओ वरना! नल का पानी चला जाएगा
मन्नू : फिकर मत कीजिए मैंने दरवाजा बंद कर दिया है। अब पानी नहीं जा पाएगा।

* राहुल : मम्मी आज हमारे क्लास के टीचर ने होमवर्क दिया है। और अगर हमने होमवर्क नहीं किया तो हमें मुर्गा बनना पड़ेगा।
राहुल : मम्मी मैं होमवर्क के लिए प्रेक्टिस करने जा रहा हूँ।
मम्मी : वाह! मेरा बेटा मुर्गा बनने से बचने के लिए पढ़ाई कर रहा है।
राहुल : मम्मी को क्या पता कि मैं पढ़ाई की प्रेक्टिस नहीं मुर्गा बनने की प्रेक्टिस कर रहा हूँ।

* रमेश : दुकान वाले भाई मुझे एक अच्छा पेन दे दो।
दुकानदार : ये लो बेटा अच्छा पेन, बहुत अच्छा चलता है।
रमेश : मुझे चलने वाला नहीं लिखने वाला पेन चाहिए।

* अमर : मम्मी मुझे स्कूल से निकाल दिया है।
मम्मी : इस बार क्या शरारत की?
अमर : मम्मी मैने मच्छर मारा।
मम्मी : मच्छर मारने से स्कूल से निकाल दिया।
अमर : मम्मी मच्छर सर के गाल पर बैठा था।

* टीचर : रोमी ईधर आओ और इस चार्ट पर इण्डिया खोज कर बताओ।
रोमी : सर ये रहा।
टीचर : रोमी बताओ इण्डिया की खोज किसने की?
रोमी : मैने।

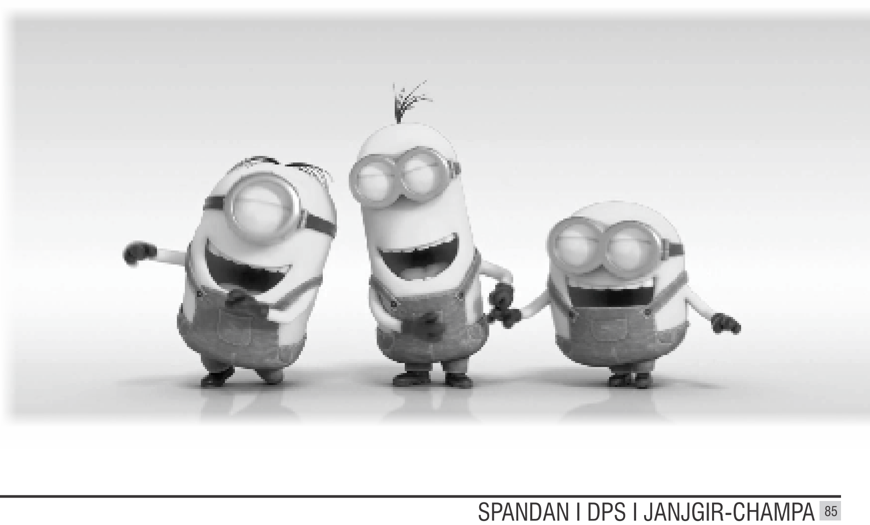

स्वच्छता गान

मन की सफाई ज़रूरी है, तन की सफाई ज़रूरी है,
मन की सफाई ज़रूरी है, तन की सफाई ज़रूरी है।
घर की सफाई से पहले, गलियों की सफाई ज़रूरी है।
साफ-सफाई वाले ही जीवन में खुशियाँ पाते,
सारी दुनियाँ को अपने जीवन का राज बताते।
धरती की सफाई से पहले, अम्बर की सफाई ज़रूरी है,
घर की सफाई से पहले, गलियों की सफाई ज़रूरी है।
तन्दुरुस्ती की पहली सीढ़ी साफ सफाई रखना,
साफ सफाई वाले से ही है मीठा फल चखना।
स्कूल की सफाई से पहले, पुस्तक की सफाई ज़रूरी है।

पल्लवी साहू
कक्षा-8 (अ)
DPS-JC/918

माँ

माँ मेरे जीने की वजह है,
माँ मेरे जीवन की राह है,
मैं कभी भी दुःख में नहीं होती,
क्योंकि हर जगह माँ मेरे साथ होती है।
माँ हर संकट में मेरे पास होती है,
मेरी हर सफलता पर वह खुश होती है।
मैं सुख के परदे में जीती हूँ,
तो वही माँ मेरे लिए दुःख के परदे में जीती है।

माँ तुम्हारी सेवा में,
मैं अपना जीवन अर्पण कर दूँगी,
आज उसी की वजह से,
मैं इस दुनियाँ में आई,
और खुशी से जीना सीखा,
उन्हें भूलना मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती है व बदकिस्मती,
माँ तुम्हारी जगह कोई नहीं ले सकता,
तुम्हारे कदमों में माँ,
सर्वस्व वार दूँगी।

माँ मेरे मरते दम तक तुम मेरे जीवन और दिल में रहोगी,
माँ तुम्हारी जगह कोई और दूसरा नहीं ले सकता,
तुम बस तुम ही हो।

शुभी अग्रवाल
कक्षा-7 (ब)
DPS-JC/165

पल पल रहो प्रसन्न

चाहे जैसी हो कठिनाई पल-पल रहो प्रसन्न।
देखो तो सब पेड़ लगाएँ हंसकर सहते हैं बाधाएँ।
चित्त प्रसन्न रहेगा तब ही अंग लगेगा अन्न।
उत्साहित रहना पसंद हो, और हौसला भी बुलंद हो।
तन से मन से और लगन से रहो टनाटन टन्न।
जिसमें जितनी होती दृढ़ता वह उतना ही आगे बढ़ता।
खुशियाँ ऐसी खनकें जैसे सिक्के खनकें खन्न।

चैतन्य कर्ष
कक्षा-7 (अ)
DPS-JC/380

भूल

डॉक्टर की भूल कब्र में दफ़न हो जाती है,
वकील की भूल फाइल में बंद हो जाती है,
इन्जीनियर की भूल सीमेंट लोहे में दब जाती है,
व्यापारी की भूल तिजोरी में बंद हो जाती है,
लेखक की भूल किताबों में बंद हो जाती है,
नेता की भूल मतपेटी में बन्द हो जाती है।
शिक्षक की भूल सारे समाज में उभर जाती है।

अदिति अग्रवाल
कक्षा-7 (ब)
DPS-JC/930

अदिति अग्रवाल
कक्षा-7 (ब)
DPS-JC/930

बढ़ गया है भ्रष्टाचार

बढ़ गया है भष्टाचार, उजड़ गया है संसार,
हो रहा है अत्याचार,
बढ़ गया है भष्टाचार।।

बापू की उठाओं लाठी, तो पड़ेगी पुलिस की लाठी
क्योंकि बिक गई है, वर्दी खाकी।
अब कुछ नहीं रहा बाकी।
क्योंकि बढ़ गया है भष्टाचार,
नहीं पाया कहीं सदाचार।

हो रहा अत्याचार, बढ़ गया है भ्रष्टाचार,
रो रहा है सब जन, नहीं रहा कोई सज्जन।
नेता हो रहा है बेईमान, बिक गया है ईमान,
बढ़ गया है भ्रष्टाचार, उजड़ गया है संसार।

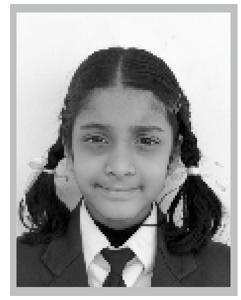

आर्या अग्रवाल
कक्षा-3 (अ)
DPS-JC/566

माँ

"स्नेह की सबसे अनोखी दृष्टि,
माँ की गोद में पनाह लेती है सृष्टि!
एक अनुपम एहसास,
जो होता है माँ के पास,
नन्हें-नन्हें कोमल हाथों का,
पल-पल एक नई अनुभूति
महसूस करती है ममत्व की ज्योति।

फ़िज़ाओं में जिस तरह, रागिनी का मन है।
गुलशन में जिस तरह, फूलों का चमन है।
मुस्कान में जिनका, अनोखा फन है।
स्नेह ऐश्वर्यों का जिनमें , अनोखा धन है,
प्रभु की तरह जिनमें अनोखा मन है।
वह कोई और नहीं
" माँ " स्वरूप सुमन है!

जोक

सुजल अग्रवाल
कक्षा-7 (ब)
DPS-JC/563

* अध्यापक - चाँद पर पहला कदम किसने रखा?
  पप्पू - नील आर्मस्ट्रांग ने।
  अध्यापक - और दूसरा।
  पप्पू - दूसरा भी उसी ने रखा होगा..... लंगड़ी खेलने थोड़े गया होगा।
* पति - ''मेरी शर्ट उल्टी करके प्रेस करना...
  पत्नी - ठीक है!!!
  पति ने १० मिनट बाद पूछा, मेरी शर्ट प्रेस हो गई......
  पत्नी - नहीं
  पति - क्यों !!!
  पत्नी - उल्टी नहीं आ रही है।

गार्गी पाण्डेय
कक्षा-9 (अ)
DPS-JC/151

मैं हूँ ? कौन ये बात तू सोच।

अच्छा चलता था,
दुकानों में याद रखना,
अब नहीं मिलूंगा याद रखना।

कहना है ये बात याद रखना,
अब ईमानदारी की राह पर ही चलना,
नहीं है, नहीं है ब्लैक नहीं है
क्योंकि अब मैं ही नहीं हूँ।

मैं था पाँच-सौ, हजार का नोट,
अब लौट कर नहीं आऊँगा,
ये बात तू सोच।

अब ब्लैक नहीं व्हाइट कमाने का सोच
सोच-सोच-सोच वरना जेल की हवा खाएगा रोज।

काला धन

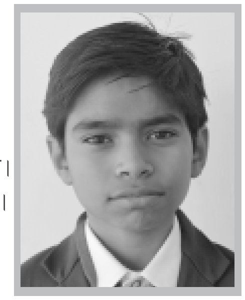

आयुष मधुकर
कक्षा-7 (अ)
DPS-JC/1304

काला धन भई काला धन, क्या होता है, भाई काला धन!
जिस धन का कोई हिसाब न हो, जिस धन पर कोई टैक्स न हो।
वे सारे बेहिसाबी है भाई कालाधन, अफसर, नेता, और व्यापारी।
चुपके-चुपके - छुपके-छुपके आपस में करके साठगाँठ।
बेइमानी से जो बनाते धन, वह होता है काला धन।

बेटी बोझ नहीं है।

शाम हो गई अब घूमने चलो ना पापा
चलते-चलते थक गई सिने से लगा लो ना पापा
अँधेरे से डर लगता है, सिने से लगा लो ना पापा
मम्मी तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुला दो ना पापा।
स्कूल तो पूरा हो गया
अब कॉलेज तो जाने दो ना पापा
पाल पोसकर बड़ा किया,
अब विदा तो करो ना पापा।
डोली में बिठा ही दिया
तो आँसू तो मत बहाओ ना पापा
आप की मुस्कान अच्छी है,
एक बार और मान जाओ ना पापा
आप ने मेरी हर बात मानी
एक बात और मान जाओ ना पापा
इस धरती पे बोझ नहीं है बेटियाँ
दुनियाँ को समझाओ ना पापा।

इशिता तिवारी
कक्षा-3 (ब)
DPS-JC/046

बेटी हूँ मैं सहारा बनूगीं

बेटी बेटी हूँ मैं बेटी मैं तारा बनूँगी -२
तारा बनूँगीं मैं सहारा बनूँगीं।।
गगन में चमके चंदा मैं धरती पे चमकूँगी।
धरती पे चमकूँगी मैं उजियारा करूँगी।।
बेटी हूँ मैं बेटी मैं तारा बनूँगी,
पढूँगी लिखूँगी मैं मेहनत भी करूँगी।
अपने पाँव से चलकर दुनियाँ को देखूँगी
दुनियाँ को देखूँगी मैं दुनियाँ को समझूँगी।।
बेटी हूँ मैं बेटी मै तारा बनूँगी।
फूल जैसे सुंदर बागों में खिलूँगी।।
तितली बनूँगी मै हवा में ऊडूँगी।
हवा में ऊडूँगी मै नाचूँगी गाऊँगी।।
बेटी हूँ मैं बेटी मैं तारा बनूँगी।
तारा बनूँगी मै सहारा बनूँगी।।

इशिता तिवारी
कक्षा-3 (ब)
DPS-JC/046

पिता

मेरी ताकत मेरी पूँजी मेरी पहचान है पिता
घर की ईंट-ईंट में शामिल उनका खून-पसीना।
सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की शान पिता
मेरा इज़्ज़त मेरी शोहरत मेरा रूतबा मेरा मान है पिता
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान है पिता
रिश्ते उनके दम से सारे, बातें उनसे है
सारे घर के दिल की धड़कन सारे घर की जान पिता
शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कर्मों का
उसकी रहमत उसकी नेमत उसका है वरदान पिता।

सात्विक पटेल
कक्षा-3 (अ)
DPS-JC/910

माँ

मेरी माँ बहुत प्यारी है, वे रोज सुबह पहले उठ जाती है। भगवान से लेकर घर के सब लोगों का ध्यान मेरी माँ ही रखती है। वे दादा-दादी का पूरा ध्यान रखती हैं। पापा, मेरी और मेरी छोटी बहन की हर एक छोटी बड़ी बातों की परवाह भी मेरी माँ करती है। दादी कहती हैं कि मेरी माँ घर की लक्ष्मी है। मै भी माँ को भगवान के समान मानता हूँ और उनकी हर बात मानता हूँ। मेरी माँ नौकरी भी करती है घर और आफिस दोनों की जिम्मेदारी वे बहुत ही अच्छे से निभाती है। मेरी माँ गरीबों की और बीमारों की भी हर संभव मदद करती है। मेरी माँ मेरी सबसे अच्छी दोस्त है। मैं जब कोई गलती करता हूँ , माँ मेर प्यार से मुझे समझाती है। जब मैं दुःखी होता हूँ तब मेरी माँ ही मेरे मुरझाए चेहरे पर मुस्कुराहट लेकर आती है। उनके प्यार और ममतामयी स्पर्श को पाकर मैं अपने सारे दुःख भूल जाता हूँ। मेरी माँ ममता की देवी समान है, वे मुझे और मेरी बहन को हमेशा अच्छी-अच्छी बातें बताती हैं।

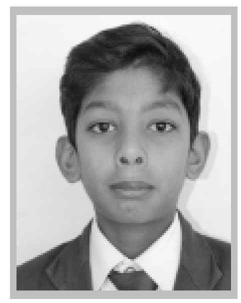

सात्विक पटेल
कक्षा-3 (अ)
DPS-JC/910

जोक हा हा हा

* सीता - दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए?
  गीता - पी जाना चाहिए।
* डॉक्टर - अगर आप चिंता छोड़ दें, तो जल्दी ठीक हो जाएँगे। वैसे आपको चिंता किस बात की है?
  मरीज - आपके बिल की।
  यदि आप किसी ऐसे आदमी को जानते हो, जिसे हँसी न आती हो, तो उसे सलाह दें कि कागज पर लगभग २५० बार हा-हा, ही-ही लिखें और इसे सुबह-शाम खाली पेट पढ़े
* सुलभ-सुयश, तुम तो कह रहे थे कि परीक्षा में पास हो गए हो। लेकिन तुम्हारा रोल नंबर तो अखबार में छपा नहीं सुयश- अखबार में जगह नहीं बची होगी। देखा नही सभी पन्ने भरे थे।

प्रज्ज्वल साहू
कक्षा 5- (अ)
DPS-JC/769

हमारी प्यारी माँ

बिना देखे मुझे प्यार किया, पेट में था मैं जब, उन्होंने मुझे दुनियाँ में लाया। पता नहीं आया, मैं कैसे और कब जिनसे मैंने जानी दुनियाँ। वही है, मेरी माँ खुद भूख से तड़पती मुझे खिलाया, जब मैं भूख से रोता था।
बिना कुछ चाहे मुझे ममता दी, गीला कपड़ा पहन के सूखे में सुलाया, जब मुझे बुखार आया वही है मेरी प्यारी माँ जैसे आटा के बिना रोटी नहीं वैसे माँ के बिना बच्चा नहीं।

श्रेयश मिश्रा
कक्षा 5- (अ)
DPS-JC/920

जैसी करनी

जन-जन की सब करो भलाई,
मिलकर बाँटो पीर पराई।

दुःख में सबका साथ निभाओ
कभी न दुःखियों को ठुकराओ।

सत्य-धर्म के पथ पर चलना,
मिलजुल कर है हमको रहना।

पाप-कपट ना हिंसा करनी,
जैसी करनी, वैसी भरनी।

आर्यन सिंह
कक्षा 5- (अ)
DPS-JC/322